८ उद्योग तथा व्यापार

इस पाठ में हम स्वातंत्र्योत्तर कालखंड के उद्योग तथा व्यापार के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे।

भारत स्वतंत्र होने के बाद औद्योगिक विकास को गति देने के लिए वर्ष १९४८ में 'भारतीय औद्योगिक वित्त निगम' की स्थापना की गई। औद्योगिक परियोजनाओं को दीर्घावधि ऋण उपलब्ध करवा देना इसका उद्देश्य था। साथ ही; १९५४ में औद्योगिक क्षेत्र का अधिक विकास होने के लिए 'भारतीय औद्योगिक विकास निगम' की स्थापना की गई।

भारत के प्रमुख उद्योग

वस्त्रोद्योग : देश के कुल औद्योगिक उत्पादन में वस्त्रोद्योग का योगदान लगभग १४% है।

वस्त्रोद्योग में यंत्रकरघा और हथकरघा का समावेश होता है। हथकरघा उद्योग श्रमप्रधान है। 'टेक्सटाइल कमेटी एक्ट १९६३' के अनुसार वस्त्रोद्योग समिति की स्थापना की गई है। यह समिति देश के बाजारों और निर्यात के लिए तैयार किए जाने वाले वस्त्रों की गुणवत्ता निश्चित करने का कार्य करती है।

रेशम उद्योग : इस उद्योग का कार्य वस्त्रोद्योग मंत्रालय के अंतर्गत चलता है। बेंगलूरू की 'सेरिबायोटिक रिसर्च लेबोरेटरी' में रेशम के कीड़ों की प्रजातियों और शहतूत के वृक्षों पर अनुसंधान किया जाता है। यह उद्योग प्रमुख रूप से कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, जम्मू-कश्मीर राज्यों में चलता है। इसी तरह; इस उद्योग का विस्तार आदिवासीबहुल राज्यों में भी किया जाता है।

पटसन (जूट) उद्योग : पटसन उत्पादन में भारत प्रमुख देश है। भारत से बड़ी मात्रा में पटसन का निर्यात होता है। पटसन से कपड़ा, बोरे, सुतली आदि वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

क्या आप जानते हैं?

स्वबचत गुट तथा स्वयंसेवी संस्था (एन.जी.ओ.) की सहायता से बुनकरों की सहायता करने वाली 'मेगा क्लस्टर' योजना है। इसके अंतर्गत कच्चा माल, डिजाइन सामग्री, तकनीकी विकास तथा बुनकरों के कल्याण के लिए सहायता की जाती है।

हस्तशिल्प : यह श्रमप्रधान क्षेत्र है। अधिक रोजगार क्षमता, कम निवेश, अधिक लाभ, निर्यात को प्रधानता और अधिक विदेशी मुद्रा के कारण हस्तशिल्प क्षेत्र में शिल्पकारों को रोजगार मिला है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के कारीगरों को बाजार में काम उपलब्ध करवा देने के लिए ''दिल्ली हाट'' जैसी बाजार प्रणाली अनेक शहरों में शुरू की गई है। उनमें मुंबई भी एक शहर है।

वाहन उद्योग : वाहन उत्पादन में भारत प्रमुख देश है। भारत से चालीस देशों में वाहन निर्यात किए जाते हैं। भारत के वाहन उद्योग को 'सनराइज क्षेत्र' कहा जाता है। भारत का ट्रैक्टर उद्योग विश्व में सबसे बड़ा उद्योग है तथा विश्व के एक तिहाई ट्रैक्टरों का उत्पादन भारत में होता है। भारत के ट्रैक्टर तुर्किस्तान, मलेशिया और अफ्रीका महाद्वीप के देशों में निर्यात किए जाते हैं।

सीमेंट उद्योग : गृहनिर्माण और बुनियादी संरचना के विकास में सीमेंट उद्योग की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। तकनीकी ज्ञान से संबंधित सर्वाधिक प्रगत उद्योगों में यह उद्योग है। वर्तमान में भारत विश्व में सीमेंट निर्माण उद्योग में महत्त्वपूर्ण देश बन गया है।

चमड़ा उद्योग : यह भारत का सबसे बड़ा तथा निर्याताभिमुख उद्योग है।

नमक उद्योग : भारत नमक उद्योग में भी प्रमुख देश रहा है। भारत में नमक का वार्षिक

उत्पादन २०० लाख टन होता है। आयोडीनयुक्त नमक का उत्पादन ६० लाख टन होता है।

साइकिल उद्योग : साइकिल उत्पादन में भारत विश्व में अग्रसर है। पंजाब और तमिलनाडु राज्यों में साइकिलों का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है। लुधियाना शहर देश का प्रमुख साइकिल उत्पादन केंद्र है। भारत नाइजीरिया, मेक्सिको, केनिया(केन्या), युगांडा, ब्राजील आदि देशों को साइकिल निर्यात करता है।

खादी तथा ग्रामोद्योग : ग्रामीण भाग के औद्योगीकरण को बढ़ावा देने के लिए खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग की स्थापना की गई। ग्रामीण क्षेत्र के पारंपरिक उद्योग, हस्त उद्योग, कुटीरोद्योग तथा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध साधन सामग्री तथा मानव संसाधन का उपयोग में लाने वाले लघु उद्योगों का विकास हो तथा रोजगार निर्मिति के माध्यम से गाँव स्वावलंबी बनें; ये इस आयोग के प्रमुख उद्देश्य हैं।

कृषि उद्योग : भारत में पारंपरिक तथा आधुनिक पद्धति से कृषि की जाती है। कृषि के अनेक कार्य बैलों की सहायता से भी किए जाते हैं। उसी तरह जोताई, बोआई से लेकर कटाई, मँड़ाई आदि कार्य यंत्रों द्वारा किए जा रहे हैं।

भारत में ग्रामीण क्षेत्र का प्रमुख व्यवसाय कृषि और कृषि पर आधारित अन्य कार्य हैं। गाँवों-देहातों में कृषि तथा पशुपालन व्यवसाय चलता है। कृषि के कार्य और कृषि उत्पादन पर ७०% समाज निर्भर है। कृषि उद्योग में पुरुषों के साथ महिलाओं का भी बहुत बड़ा योगदान है।

भारत में कृषि व्यवसाय विविध मौसमों में चलता है। खेतों में अनेक तरह की फसलें ली जाती हैं। प्रमुख रूप से ज्वार, गेहूँ, चावल, दाल, तिलहन का उत्पादन लिया जाता है। उसी के साथ-साथ कपास और गन्ना पर प्रक्रिया कर कपड़ा और शक्कर के उद्योग भी चलते हैं।

कृषि से ही फलों और शाक-सब्जियों का बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है। वर्तमान में इनपर प्रक्रिया करने वाले अनेक उद्योग चल रहे हैं। कृषि से मनुष्य की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। कृषि व्यवसाय को प्रोत्साहन देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक और सहकारी संस्थाओं द्वारा किसानों को ऋण दिया जाता है। पंचायत समिति द्वारा कृषि संबंधी सुधार के लिए प्रशिक्षण योजना, कृषि सैर और किसान सम्मेलन जैसी योजनाएँ आयोजित की जाती हैं। कृषि औजारों, बीजों और खादों की आपूर्ति भी की जाती है। कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार सेवा विभाग द्वारा किसानों को मृदा परीक्षण, फलोद्यान, नर्सरी, मत्स्य व्यवसाय, मुर्गी पालन, बकरी पालन, गाय-भैंस पालन, दुग्ध व्यवसाय का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। जिला व्यवसाय मार्गदर्शन संस्था की ओर से भी मार्गदर्शन दिया जाता है। उत्पादित माल के संग्रह हेतु गोदाम (वेअर हाउस) निर्माण के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है।

भारत खाद्यान्न उत्पादन और फसल पद्धति में आत्मनिर्भर हो रहा है। भारत में टपक सिंचन और जैविक कृषि जैसी आधुनिक पद्धति से कृषि की जा रही है।

भारत सरकार की नीति : चौथी पंचवर्षीय योजना की नीति अवधि में कागज उद्योग, औषधीय उद्योग, मोटर ट्रैक्टर उद्योग, चमड़े की वस्तुएँ, वस्त्रोद्योग, खाद्य पदार्थ प्रक्रिया उद्योग, तेल, रंग, शक्कर आदि उद्योगों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

वर्ष १९७० की औद्योगिक अनुज्ञप्ति नीति के अनुसार पाँच करोड़ रुपयों से अधिक निवेश लगाने वाले सभी कारखाने भारी उद्योग क्षेत्र में लाना निश्चित किया गया। सरकारी क्षेत्र के लिए आरक्षित न रखते हुए भारी उद्योग में निवेश करने की स्वतंत्रता बड़े औद्योगिक संस्थानों और विदेशी कंपनियों को देना भी निश्चित किया गया। इस नीति के अनुसार वर्ष १९७२ के अंत तक सरकारी पंजीयन कार्यालय में ३ लाख १८ हजार लघु उद्योग पंजीकृत किए गए।

खनिज संसाधन : देश के औद्योगिक विकास में लौह और पत्थर का कोयला इन दो खनिजों की उपलब्धता का बड़ा योगदान होता है। हमारे देश में लौह, मैंगनीज, कोयला, खनिज तेल आदि का पर्याप्त भंडार पाया जाता है।

वन संसाधन : वन संसाधन पर आधारित उद्योगों के लिए सरकार ने कुछ वन आरक्षित रखे हैं। वनों के रक्षण का काम राज्य सरकार और केंद्र सरकार, स्थानीय लोग, कर रहे हैं। निर्माण कार्य, कागज, अखबारी कागज, रेशम, माचिस, औषधीय वनस्पति, शहद, लाख, रंगकाम के लिए आवश्यक कच्ची सामग्री आदि उद्योगों के लिए वन आवश्यक है।

मत्स्य उद्योग : नदी, नहर, तालाब, सरोवर जैसे मीठे पानी एवं सागरीय जल में मिलने वाली मछलियों से मत्स्योत्पादन होता है। इस व्यवसाय के संवर्धन के लिए बंदरगाहों का निर्माण, पुराने बंदरगाहों का विकास, मत्स्यबीज केंद्र, मत्स्य व्यवसाय प्रशिक्षण केंद्र तैयार किए गए हैं।

पर्यटन उद्योग : भारत को समृद्ध सांस्कृतिक विरासत प्राप्त है। देश के कोने-कोने में विविध धर्मों के प्रार्थना स्थल, तीर्थ स्थली, नदियों के संगम, किले, गुफाएँ हैं। इसी लिए देश-विदेश के नागरिक भारत में पर्यटन हेतु वर्षभर आते रहते हैं। पर्यटन विकास निगम द्वारा पर्यटकों के लिए आवास और यात्रा की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इन स्थानों पर विविध वस्तुओं की बिक्री और होटल व्यवसाय बड़ी मात्रा में चलता है।

पर्यटकों को संबंधित क्षेत्र की जानकारी देने के लिए कुछ स्थानों में मार्गदर्शक होते हैं। कुछ दुर्गम स्थलों तक वाहन पहुँच नहीं सकते, उन स्थलों पर वहाँ के स्थानीय लोग पारिश्रमिक लेकर पर्यटकों की सहायता करते हैं। इससे भी रोजगार निर्माण होता है।

व्यापार आयात - निर्यात : वर्ष १९५१ में योजना प्रारंभ होने के बाद औद्योगिक वस्तुओं और उनके लिए लगने वाले कच्चे माल का आयात बड़ी मात्रा में बढ़ने लगा। भारत में यंत्र सामग्री, लोहा, खनिज तेल, खादें और औषधियाँ आदि का आयात किया जाता है।

भारत ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के उद्देश्य से निर्यात को बढ़ावा दिया है। भारत के निर्यात में चाय, कॉफी, मसाले के पदार्थ, सूती कपड़ा, चमड़ा, जूता, मोती तथा मूल्यवान हीरे आदि वस्तुओं का समावेश होता है।

आंतरिक व्यापार : भारत का आंतरिक व्यापार रेलमार्ग, जलमार्ग, सड़क और विमान मार्ग से चलता है। मुंबई, कोलकाता, कोची, चेन्नई ये महत्त्वपूर्ण बंदरगाह हैं। आंतरिक व्यापार में कोयला, कपास, सूती कपड़ा, चावल, गेहूँ, कच्चा पटसन, लोहा, इस्पात, तिलहन, नमक, चीनी आदि वस्तुओं का समावेश होता है।

देश के उद्योग-धंधों में होने वाले विकास के कारण जीवन और रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठता है। रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं। संक्षेप में कहा जाए तो देश की प्रगति में इनकी सहायता होती है।

अगले पाठ में हम भारतीय लोगों के बदलते जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

स्वाध्याय

१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए।

(१) वर्ष १९४८ में ..... उद्देश्य से भारतीय औद्योगिक वित्त निगम की स्थापना की गई।

(अ) औद्योगिक क्षेत्र का अधिक विकास होना आवश्यक है।

(ब) औद्योगिक परियोजनाओं को दीर्घ अवधि के लिए ऋण उपलब्ध करवा देना आवश्यक है।

(क) रोजगार निर्मिति होनी चाहिए।

(ड) तैयार माल की गुणवत्ता निश्चित होनी चाहिए।

(२) भारत के .....उद्योग को 'सनराइज क्षेत्र' कहा जाता है।
(अ) पटसन (ब) वाहन
(क) सीमेंट (ड) खादी तथा ग्रामोद्योग

(३) वस्त्रोद्योग समिति का प्रमुख कार्य .....है।
(अ) कपड़ा उत्पादन करना।
(ब) वस्त्रों की गुणवत्ता निश्चित करना।
(क) वस्त्र निर्यात करना।
(ड) नागरिकों को रोजगार उपलब्ध करवा देना।

(४) साइकिल उत्पादन में ..... भारत का प्रमुख शहर है।
(अ) मुंबई (ब) लुधियाना
(क) कोची (ड) कोलकाता

(ब) निम्न में से विसंगत जोड़ी पहचानिए और लिखिए।

(१) भारतीय औद्योगिक वित्त निगम – औद्योगिक परियोजनाओं को दीर्घावधि के लिए ऋण उपलब्ध करवा देना।
(२) औद्योगिक विकास निगम – औद्योगिक क्षेत्र का विकास करना।
(३) वस्त्रोद्योग समिति – बुनकरों का कल्याण करना।
(४) खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग – ग्रामीण क्षेत्र में औद्योगीकरण को बढ़ावा देना।

२. टिप्पणी लिखिए।

(१) भारत का आयात – निर्यात
(२) भारत का आंतरिक व्यापार

३. निम्न कथन कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

(१) भारत में पर्यटन उद्योग बढ़ रहा है।
(२) भारतीय जनता के रहन – सहन का स्तर सुधर रहा है।

४. निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार में लिखिए।

(१) कृषि व्यवसाय को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार कौन-कौन-से प्रयत्न कर रही है?
(२) पर्यटन के क्षेत्र में नागरिकों के लिए रोजगार कैसे निर्माण होता है?
(३) भारत में वन संसाधन पर आधारित कौन-कौन-से व्यवसाय चलते हैं?
(४) भारत के चमड़ा उद्योग पर टिप्पणी लिखिए।

५. दी गई सूचना के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए।

चौखट पूर्ण कीजिए।

भारत में आयात होने वाली वस्तुएँ	
भारत से निर्यात होने वाली वस्तुएँ	

उपक्रम

(१) सफल उद्योगपतियों के चित्र संग्रहित कीजिए।
(२) हमारे दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं में से कौन-सी वस्तुएँ परिसर में निर्मित होती हैं, कौन-सी वस्तुएँ बाहर से लाई जाती हैं, इसकी तालिका बनाइए।